15 मई पर विशेष

# ''अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस''

सुन्दर और आदर्श परिवार की कल्पना उससे जुड़े हुए सदस्यों के आपसी प्रेम सौहार्द, आदर्श और सुनीतियों के आधार से आंकी जाती है। परिवार की जड़ों को मजबूत बनाने के लिए आपसी विश्वास और सद्भावनाओं का होना अति आवश्यक है। यही विश्वास ''वसुधैव कुटुम्बकम'' की भावनाओं को स्थायित्वता प्रदान करता है। परिवारो ंसे मिलकर एक गाँव, गाँवों से एक राष्ट्र का निर्माण करते है। अच्छे राष्ट्र का निर्माण कर्ता वहाँ का नागरिक ही होता है और अच्छा नागरिक बनाना समूचे देश का ही कर्त्तव्य होता है। एक एक व्यक्ति यदि उदार दिल का हो और यदि वह सोच ले कि सारा विश्व ही मेरा है और उसकी संस्कृति को बनाये रखने के लिए मुझे कुछ अच्छा करना ही है, तो यही है शुभ भावना मनुष्य को देवत्व पद की प्राप्ति कराती है।

भारतीय संस्कृति विश्व की सर्वोच्च संस्कृतियों में से सर्वश्रेष्ठ संस्कृति मानी गयी है। क्योंकि यह सभ्यता की कसौटी पर परखकर खरी उतारी गई है। भारत की धरोहर के रूप में संयुक्त परिवार प्रणाली आज भी विद्यमान है। यहाँ चार पीढ़ियां एक ही घर में एक ही परिवार में आनन्द और प्रेमपूर्वक रहते आज भी देखा जा सकता है। पश्चिमी देशों के लिए एक बहुत बड़ा आश्चर्य है क्योंकि वहाँ की सभ्यता भारतीय संस्कृति से बिल्कुल विपरीत है। यहाँ विशिष्ट, बुजुर्गों को अतीव सम्मान और अनुभवीय या यो कहें कि भगवान के रूप में माना जाता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी भारत में सच्चा-सच्चा रामराज्य लाना चाहते थे। रामराज्य का अर्थ है सदाचारी देवतुल्य मानवों का राज्य जहाँ सम्पूर्ण पवित्रता हो। शेर और गाय भी एक घाट पर पानी पीते हों। प्रकृति सुखदायी हो मनुष्य आत्माभिमानी हो। आपसी प्रेम और सद्भावनाओं का राज्य है। इसीलिए आदिकाल से ही यहाँ परिवारों को महत्व दिया गया है। क्योंकि समूचे देश की दिवार, परिवार के कंधों पर टिकी होती है।

भारत भूमि की रक्षा हेतु यहाँ अनेकानेक धर्मस्थापक भी आये और उन्होंने अपने-अपने धर्मों की स्थापना की। मूलरूप में सभी का एक ही नारा रहा हिन्दु, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आपस में भाई-भाई। कहते तो जरूर है। परन्तु यदि आज के समय पर नजर दौड़ाये तो लगता है कि बस अब केवल कहने मात्र का ही रहा। क्योंकि आज समाज का नैतिक पतन होने के कारण

जातिवाद, धर्मवाद, रूपवाद के रूप से देखकर व्यवहार करते तथा भाई-2 के नारे को उपहास के रूप में उपयोग करते है।

यदि सैद्धान्तिक तरीके एवं वास्तविकता के रूप में देखा जाये तो जो अतीत से लोगों ने यह ढर्रा बना रखी है वह सच एवं स्तुत्य है। पूर्वजों में भेदभाव का अभाव देखा जाता था और उसका यही कारण था कि लोग भावना प्रेमी तथा एक मनुष्य मात्र के अन्दर तक देखकर एक दूसरे के साथ व्यवहार करते थे।

आज भी जब एक ही घर के पति, पत्नी, बाप, बेटा किसी धार्मिक स्थल या मंदिरों में जाते है तो उनके मुख से अनायास ही निकल पड़ता है कि हे भगवान तुम मात-पिता हम बालक तेरे। तेरे कृपा से सुख घनेरे। यह विचारणीय तथ्य है कि पति और पत्नि तथा बाप और बेटे दोनो के एक ही माता पिता तो हो नहीं सकते तो यह कथन क्यों अपने आप में छवि बनाये हुए है। निश्चित तौर पर यह साबित करता है कि इसकी सत्यता तो अवश्य है। गहरे मननीय तथ्यो के बाद यह निष्कर्ष निकलता है कि एक जो पिताओं का पिता, माताओं का माता, जिसके लिए गायन है कि त्वमेव माताश्च पिता त्वमेव, बन्धुश्च सखा त्वमेव, श्लोक इस मोड़ पर ला खड़ा करता है कि उसी की संतान होने के नाते सभी एक ही गायन उसके समक्ष प्रस्तुत करते है चाहे वह मंदिर, मस्जिद, गुरूद्वारा अथवा कोई भी धार्मिक स्थल हो। आदिकाल के समय में इसकी प्रगाढ़ मान्यता होने के नाते लोग आपसी व्यवहार करते थे जिससे भारत में संयुक्त परिवार प्रणाली का प्रारम्भ हुआ था और आज तक उसकी लकीरें चली आ रही है।

भारत की संस्कृतियों तथा इन सभी तथ्यों को जीवित रखने के लिए अनेकानेक धर्मगुरूओं ने जब देखा कि इसका विघटन हो रहा है तो उसके लिए लोगों की इच्छाओं के मुताबिक अनेक धर्मों की स्थापना करके इसमें जान डालने की भरपूर कोशिश की। फिर भी लोगों ने इसको नजर अंदाज करके संयुक्त परिवार प्रणाली को कायम नहीं रख पायें। वास्तव में परिवार मनुष्य की पहली इकाई है। परिवार के एक सदस्य का सुख और दुख पूरे परिवार के सदस्यों के सुख दुख में बँट जाता है। भारत में पारिवारिक सम्बन्धों में सुख, दुख के जुड़ हुए एहसास को उजागर करते है। परिवार में प्यार होता है जो मनुष्य अपने परिवार का प्यार नहीं पाता है वह इससे अनभिज्ञ रहता है कि प्यार की परिभाषा क्या है और परिवार में इसकी महत्ता क्या है।

इन सभी को कायम रखकर अब जरूरत है अपने सच्चे माता-पिता परमपिता परमात्मा को अपना सच्चा माता-पिता का एहसास कर उनके अविनाशी शक्तियों और अविनाशी खजानों को प्राप्त कर उसे एक साकार रूप देकर पुन: उस दिन को वापस लाना है जिसको हम आज तक केवल अतीत के रूप में देखा करते आय है। ऐसा ही व्यवहार कर वसुधैव कुटुम्बकम के सपना को साकार कर सकते है तथा एक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय परिवार की स्थापना करके एक परिवार की डोरी में बांध सकते है। इसी क्रम से हम अपने परिवार का तथा अपने भारत देश का विकास कर सकते है।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com